वेदोंमें ज्योतिष

(श्रीओमप्रकाशजी पालीवाल, एम्०ए०, एल्-एल्० बी०)

ज्योतिष क्या है? यह ज्योतिका शास्त्र है। ज्योति आकाशीय पिण्डों—नक्षत्र, ग्रह आदिसे आती है, परंतु ज्योतिषमें हम सब पिण्डोंका अध्ययन नहीं करते। यह अध्ययन केवल सौरमण्डलतक ही सीमित रखते हैं। ज्योतिषका मूलभूत सिद्धान्त है कि आकाशीय पिण्डोंका प्रभाव सम्पूर्ण ब्रह्माण्डपर पड़ता है। इस प्रकार मानव-संसारपर भी इन नक्षत्रों एवं ग्रहों आदिका प्रभाव पड़ता है। दूसरे शब्दोंमें आकाशीय पिण्डों एवं मानव-संसारमें पारस्परिक सम्बन्ध है। इस सम्बन्धको अथर्ववेदके तीन मन्त्र स्पष्टरूपसे दर्शाते हैं—

पहला मन्त्र है—

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि भुवने जवानि।
तुर्मिशं सुमतिमिच्छमानो अहानि गीर्भिः सपर्यामि नाकम्॥

(अथर्व० १९ । ७। १)

अर्थात् 'द्युलोक—सौरमण्डलमें चमकते हुए विशिष्ट गुणवाले अनेक नक्षत्र हैं, जो साथ मिलकर अत्यन्त तीव्र गतिसे टेढ़े-मेढ़े चलते हैं। सुमतिकी इच्छा करता हुआ मैं प्रतिदिन उनको पूजता हूँ, जिससे मुझे सुखकी प्राप्ति हो।' इस प्रकार इस मन्त्रमें नक्षत्रोंको सुख तथा सुमति देनेमें समर्थ माना गया है। यह सुमति मनुष्योंको नक्षत्रोंकी पूजासे प्राप्त होती है। यह मनुष्योंपर नक्षत्रोंका प्रभाव हुआ, जिसे ज्योतिष शास्त्र ही मानता है।

दूसरा मन्त्र है—

यानि नक्षत्राणि दिव्यन्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु।
प्रकल्पयंश्चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु॥

(अथर्व० १९। ८। १)

अर्थात् 'जिन नक्षत्रोंको चन्द्रमा समर्थ करता हुआ चलता है; वे सब नक्षत्र मेरे लिये आकाशमें, अन्तरिक्षमें, जलमें, पृथ्वीपर, पर्वतोंपर और सब दिशाओंमें सुखदायी हों।'

अब प्रश्न उठता है कि चन्द्रमा किन नक्षत्रोंको समर्थ करता हुआ चलता है। वेदोंमें इन नक्षत्रोंकी संख्या २८ बतायी गयी है। इनके नाम अथर्ववेदके १९ वें काण्डके ७वें सूक्तमें मन्त्र-संख्या २ से ५ तक (४ मन्त्रों)-में दिये गये हैं। अश्विनी, भरणी आदि २८ नाम वही हैं, जो ज्योतिषग्रन्थोंमें हैं। इस प्रकार नक्षत्रोंके नाम तथा क्रममें पूरी समानता है। इस आधारपर हम कह सकते हैं कि ज्योतिषका मूल वेदोंमें है।

तीसरा मन्त्र है—

अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सह योगं भजन्तु मे।
योगं प्र पद्ये क्षेमं च क्षेमं प्र पद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥

(अथर्व० १९। ८। २)

अर्थात् 'अट्ठाईस नक्षत्र मुझे वह सब प्रदान करें, जो कल्याणकारी और सुखदायक हैं। मुझे प्राप्ति-सामर्थ्य और रक्षा-सामर्थ्य प्रदान करें। दूसरे शब्दोंमें पानेके सामर्थ्यके साथ-साथ रक्षाके सामर्थ्यको पाऊँ और रक्षाके सामर्थ्यके साथ ही पानेके सामर्थ्यको भी मैं पाऊँ। दोनों अहोरात्र (दिवा और रात्रि)-को नमस्कार हो।'

इस मन्त्रमें योग और क्षेमकी प्राप्तिके लिये प्रार्थना है। साधारणतया जो वस्तु मिली नहीं है, उसको जुटानेका नाम 'योग' है। जो वस्तु मिल गयी है, उसकी रक्षा करना ही 'क्षेम' है। नक्षत्रोंसे इनको देनेकी प्रार्थनासे स्पष्ट है कि नक्षत्र प्रसन्न होकर यह दे सकते हैं। इस प्रकार इस मन्त्रका भी ज्योतिषसे सम्बन्ध है।

इस मन्त्रमें जो 'अहोरात्र' पद आया है, उसका ज्योतिषके होराशास्त्रमें अत्यन्त महत्त्व है। यथा—

अहोरात्राद्यंतलोपाद्धोरेति प्रोच्यते बुधैः।
तस्य हि ज्ञानमात्रेण जातकर्मफलं वदेत्॥

(बृ० पा० हो० शा० पू० अध्याय ३। २)

अर्थात् 'अहोरात्र पदके आदिम (अ) और अन्तिम (त्र) वर्णके लोपसे 'होरा' शब्द बनता है। इस होरा (लग्न)-के ज्ञानमात्रसे जातकका शुभाशुभ कर्मफल कहना चाहिये।'

आकाशीय पिण्डोंमें नक्षत्र और ग्रह दोनों आते हैं। ज्योतिषने इन दोनोंमें कुछ अन्तर किया है,जो निम्न श्लोकोंसे स्पष्ट है—

तेजःपुञ्जा नु वीक्ष्यन्ते गगने रजनीषु ये।
नक्षत्रसंज्ञकास्ते तु न क्षरन्तीति निश्चलाः॥
विपुलाकारवन्तोऽन्ये गतिमन्तो ग्रहाः किल।
स्वगत्या भानि गृह्णन्ति यतोऽतस्ते ग्रहाभिधाः॥

(बृ० पा० हो० शा० अध्याय ३। ४-५)

अर्थात् 'रात्रिके समय आकाशमें जो तेज:पुञ्ज दीखते हैं, वे ही निश्चल तारागण नहीं चलनेके कारण 'नक्षत्र' कहे जाते हैं। कुछ अन्य विपुल आकारवाले गतिशील वे तेज:पुञ्ज अपनी गतिके द्वारा निश्चल नक्षत्रोंको पकड़ लेते हैं, अत: वे 'ग्रह' कहलाते हैं।'

ऊपर तीन मन्त्रोंमें नक्षत्रोंसे सुख, सुमति, योग, क्षेम देनेकी प्रार्थना की गयी। अब ग्रहोंसे दो मन्त्रोंमें इसी प्रकारकी प्रार्थनाका वर्णन है। दोनों मन्त्र अथर्ववेदके उन्नीसवें काण्डके नवम सूक्तमें हैं। इस सूक्तके सातवें मन्त्रका अन्तिम चरण '**शं नो दिविचरा ग्रहाः**' है, जिसका अर्थ है, आकाशमें घूमनेवाले सब ग्रह हमारे लिये शान्तिदायक हों। यह प्रार्थना सामूहिक है। इस सूक्तका दसवाँ मन्त्र है—

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा।
शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः॥

अर्थात् 'चन्द्रमाके समान सब ग्रह हमारे लिये शान्तिदायक हों। राहुके साथ सूर्य भी शान्तिदायक हों। मृत्यु, धूम और केतु भी शान्तिदायक हों। तीक्ष्ण तेजवाले रुद्र भी शान्तिदायक हों।' अब प्रश्न उठता है चन्द्रके समान अन्य ग्रह कौन हैं? इसका उत्तर एक ही है कि पाँच ताराग्रह—मंगल, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनि हैं, जो चन्द्रके समान सूर्यकी परिक्रमा करनेसे एक ही श्रेणीमें आते हैं। सूर्य किसीकी परिक्रमा नहीं करता। इसलिये इसको भिन्न श्रेणीमें रखा गया है। राहु और केतु प्रत्यक्ष दीखनेवाले ग्रह नहीं हैं। इसलिये ज्योतिषमें इसे 'छायाग्रह' कहा जाता है, परंतु वेदोंने इन्हें ग्रहकी श्रेणीमें ही रखा है। इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतुको ज्योतिषमें 'नवग्रह' कहा जाता है। कुछ भाष्यकारोंने '**चान्द्रमसाः**' का अर्थ 'चन्द्रमाके ग्रह' भी किया है और उसमें नक्षत्रों (कृत्तिका आदि)-की गणना की है; परंतु यह तर्कसंगत नहीं लगता। इस मन्त्रमें आये हुए मृत्यु एवं धूमको महर्षि पराशरने अप्रकाशग्रह कहा है। ये पाप ग्रह हैं और अशुभ फल देनेवाले हैं। कुछके अनुसार गुलिकको ही 'मृत्यु' कहते हैं। उपर्युक्त मन्त्रमें इनकी प्रार्थनासे यह स्पष्ट है कि इनका प्रभाव भी मानवपर पड़ता है।

श्रीपराशरके अनुसार पितामह ब्रह्माजीने वेदोंसे लेकर ज्योतिष शास्त्रको विस्तारपूर्वक कहा है—

वेदेभ्यश्च समुद्धृत्य ब्रह्मा प्रोवाच विस्तृतम्।

(बृ० पा० हो० सारांश, उत्तरखण्ड अध्याय २०। ३)

वेद कथाङ्क